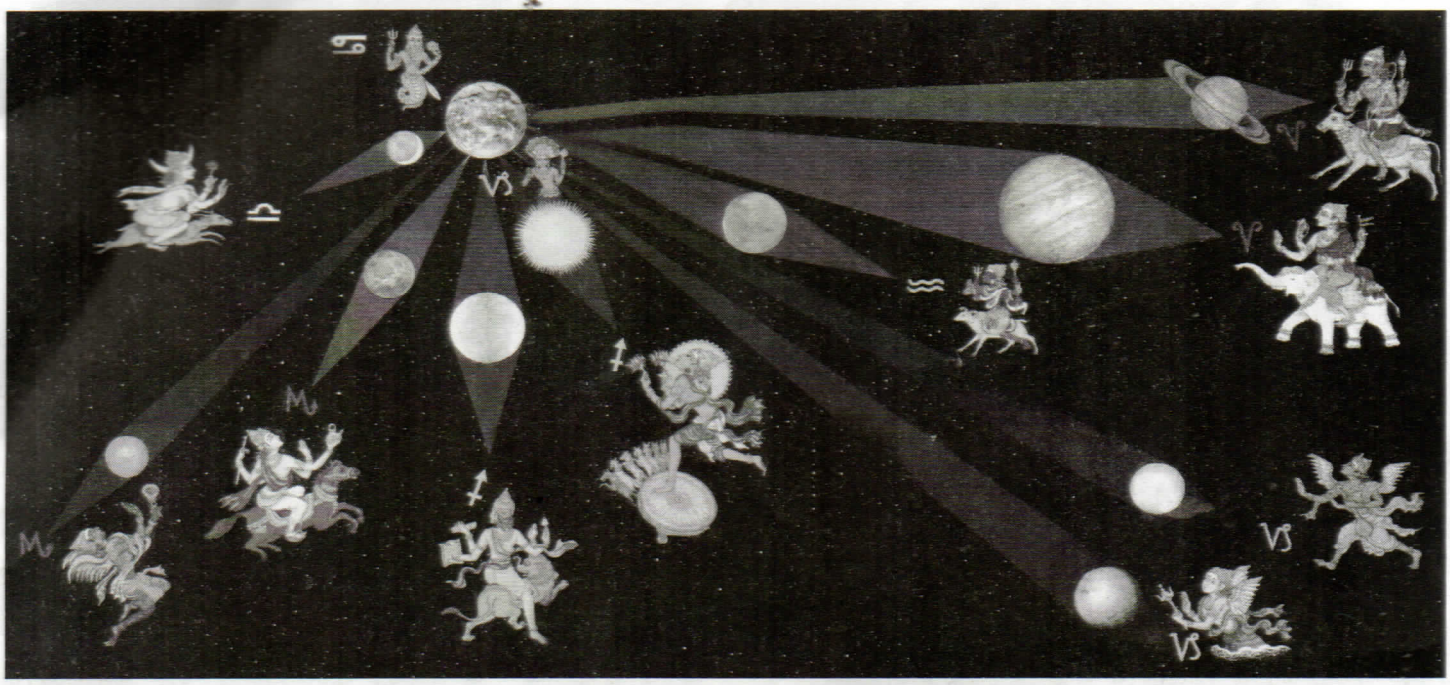

जीवन मुक्तांश से इष्टदेव का निर्धारण

आचार्य सुशील अग्रवाल

चंद्रमा की होरा का स्वामित्व पितृ अथवा पूर्वजों के पास होने से जातक को चंद्रमा की होरा से संबंधित ग्रहों की दशा में अपेक्षाकृत कम मेहनत में अधिक फल मिलता है, क्योंकि जातक को पूर्वजों का आशीर्वाद होता है।

मनुष्य अपने आध्यात्मिक पथ पर सीढ़ी-दर-सीढ़ी अग्रसर होता है। यह सीढ़ियां हैं : गुरु, माता-पिता, पितृदेव, कुलदेवी, कुलदेवता, इष्टदेव और परमात्मा। गुरु और माता-पिता का मार्गदर्शन तो प्रत्येक व्यक्ति को प्रत्यक्ष रूप में प्राप्त होता है। शेष अप्रत्यक्ष रूप में ही प्राप्त होते हैं, जिनका संक्षिप्त विवरण निम्न है :

पितृ/पूर्वज : ज्योतिषीय दृष्टिकोण से इसका आकलन होरा से किया जाता है। चंद्रमा की होरा का स्वामित्व पितृ अथवा पूर्वजों के पास होने से जातक को चंद्रमा की होरा से संबंधित ग्रहों की दशा में अपेक्षाकृत कम मेहनत में अधिक फल मिलता है, क्योंकि जातक को पूर्वजों का आशीर्वाद होता है।

कुलदेवी/कुलदेवता : हिन्दू धर्म की मान्यता अनुसार प्रत्येक व्यक्ति की मूल वंशज कोई न कोई ऋषि रहे हैं। सामान्यतः मूल ऋषि को कुलदेवता और ऋषि पत्नी को ही कुलदेवी का दर्जा प्राप्त है, जिन्हें मूल ऋषि के ज्ञान का अभाव था। उन्होंने किसी प्रतिष्ठित देवस्थल पर स्थापित देवी/देवता को कुलदेवी/देवता के रूप में पूजना, जिससे कुटुम्बजनों को आरोग्य प्राप्त हो और कर्मपथ भी निर्विघ्न रहे। प्रत्येक धार्मिक और सत्कार्य में कुलदेवी/देवता का आशीर्वाद लिया जाता है। उदाहरण के तौर पर जब फलदीपिका के रचयिता मंत्रेश्वर ने ग्रन्थ लिखना प्रारम्भ किया, तो श्लोक 2 में सरस्वती देवी, कुलदेवता, गुरुओं और नवग्रहों का मंगलाचरण निम्न है :

वाग्देवीं कुलदेवतां मम गुरुन् कालत्रयज्ञानदान्। सूर्यादींश्च नवग्रहान् गणपतिं भक्त्या प्रणम्येश्वरम्।।

इष्टदेव : हम देखते हैं कि जो मां वैष्णो देवी का भक्त है, तो वह उन्हीं की ही भक्ति में मग्न है। कोई राम का भक्त है, कोई शिवजी का, तो कोई हनुमान जी का। कोई कहता है विष्णु जी की उपासना में दिल नहीं लगता जबकि अन्य व्यक्ति को केवल शिव जी की उपासना में ही आनंद आता है।

यह सब पूर्वजन्मों के कर्म संस्कार है, जो सक्रिय हो जाते हैं। इष्टदेव जातक के मन को एकाग्रचित्त करने में सहायक होते हैं, मायिक जगत् को पहचानने में सहायता करते हैं, जिससे जातक परम शक्ति में विलय से पूर्व अन्तःकरण शुद्ध करके सुपात्र हो जाए।

एक ही परिवार के सदस्यों के इष्टदेव अलग-अलग हो सकते हैं, क्योंकि इनका आधार जातक के पूर्वजन्मों के संस्कारों पर आधारित माना जाता है। ज्योतिष भी पूर्वजन्मों के कर्मों के सिद्धांत पर आधारित है। इसीलिए इष्टदेव को जन्मपत्रिका से निर्धारित किया जा सकता है, जो इस आलेख का मुख्य विषय भी है।

शास्त्रीय आधार : महर्षि पराशर, महर्षि जैमिनी और अन्य विद्वानों के अनुसार विभिन्न ग्रह अलग-अलग

ग्रह	इष्ट देवी या इष्ट देवता
सूर्य	राम, शिव, विष्णु
चंद्रमा	कृष्ण, गौरी, पार्वती
मंगल	नृसिंह, स्कन्द, हनुमान, कार्तिकेय
बुध	बुद्ध, विष्णु, दुर्गा, गणेश
गुरु	वामन, सदाशिव, विष्णु, ब्रह्मा
शुक्र	परशुराम, लक्ष्मी, गौरी, सरस्वती
शनि	कूर्म, विष्णु
राहु	वराह, दुर्गा, सरस्वती, शेषनाग
केतु	स्कन्द, गणेश, मत्स्य, कार्तिकेय

देवी-देवताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। सारणी में पहला शब्द पराशर द्वारा, दूसरा जैमिनी द्वारा और शेष अन्य विद्वानों द्वारा कहे गए हैं :

यदि उपर्युक्त ग्रह की स्थिति नीच आदि अशुभ है, तो जातक उपर्युक्त ग्रह से संबंधित क्षुद्र देवता का भक्त होता है। जैसे, शनि यदि अशुभ है, तो जातक यक्षिणी, पिशाचिनी, भैरव आदि का भक्त होगा।

केतु को मोक्ष का कारक माना गया है। यदि जीवन मुक्तांश (नियम 3 से सन्दर्भ लें) राशि में केतु की स्थिति हो और उनके साथ अन्य ग्रह हों, तो पराशर और जैमिनी के अनुसार जातक के निम्न इष्टदेवता होते हैं :

केतु-सूर्य से शिव, केतु-चंद्रमा से गौरी, केतु-मंगल से कार्तिकेय, केतु-बुध से विष्णु, केतु-गुरु से शंकर या पार्वती, केतु-शुक्र से गौरी, केतु-शनि से विष्णु।

इष्टदेव निर्धारण के नियम

1. **आत्मकारक :** सर्वप्रथम जन्मपत्रिका में आत्मकारक का निर्धारण करें। राहु-केतु के अतिरिक्त शेष सात ग्रहों में से सर्वाधिक अंशों वाला ग्रह आत्मकारक ग्रह होता है।

2. **कारकांश :** अब नवांश में कारकांश का निर्धारण करें। आत्मकारक की नवांश राशि को कारकांश कहते हैं।

3. **जीवन मुक्तांश :** जब जीवन मुक्तांश राशि का निर्धारण करें। यह नवांश में कारकांश से द्वादश राशि होती है। इस राशि अथवा भाव से इष्ट देवी अथवा देवता का निर्धारण किया जाता है, जिसके निम्न नियम हैं :

- यदि जीवन मुक्तांश (नवांश में ही देखें) राशि में कोई एक ग्रह है, तो आपके इष्टदेव इस ग्रह अनुसार होंगे।
- यदि जीवन मुक्तांश राशि में एक से अधिक ग्रह हैं, तो उनमें से सर्वाधिक बली ग्रह अनुसार आपके इष्टदेव होंगे।

यदि जीवन मुक्तांश राशि में कोई ग्रह नहीं है, तो उस राशि के स्वामी अनुसार आपके इष्टदेव होंगे।

जन्मपत्रिका-1

जन्म दिनांक : 12 फरवरी, 1965
जन्म समय : 07:30 बजे
जन्म स्थान : आगरा (उ.प्र.)

जन्मपत्रिका

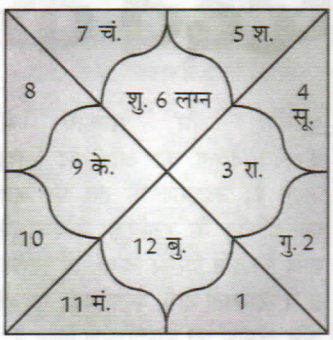

प्रस्तुत जातक की जन्मपत्रिका में सूर्य 29 अंश के होकर आत्मकारक हैं और निम्न नवांश में कन्या में स्थित हैं। जीवनमुक्तांश राशि सिंह हुई, जिसमें कोई ग्रह स्थित नहीं है। उपर्युक्त सारिणी के अनुसार, जातक विष्णु उपासक हैं। कुछ ऐसे भी मत हैं कि यदि आत्मकारक ही इष्टदेव बनता हो, तो कारकांश राशि से त्रिकोण में बैठे बली ग्रह से इष्टदेव निकालना चाहिए।

जन्मपत्रिका-2

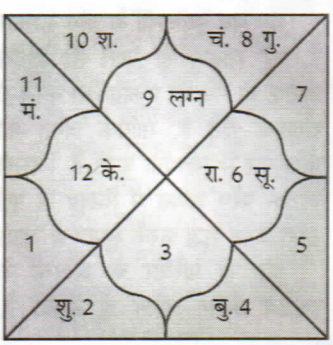

जातक की जन्मपत्रिका में सूर्य 29 अंश के होकर आत्मकारक हैं और निम्न नवांश में कन्या में स्थित हैं। जीवनमुक्तांश राशि सिंह हुई, जिसमें कोई ग्रह स्थित नहीं है।

जन्म दिनांक : 29 अगस्त, 1969
जन्म समय : 20:00 बजे
जन्म स्थान : नई दिल्ली

प्रस्तुत जातक की जन्मपत्रिका में मंगल 23 डिग्री के होकर आत्मकारक है और निम्न नवांश में कुंभ लग्न में स्थित हैं। मकर जीवनमुक्तांश राशि हुई जिसमें कोई ग्रह स्थित नहीं है। उपर्युक्त सारिणी के अनुसार, जातिका विष्णु उपासक हैं।

जन्मपत्रिका-3

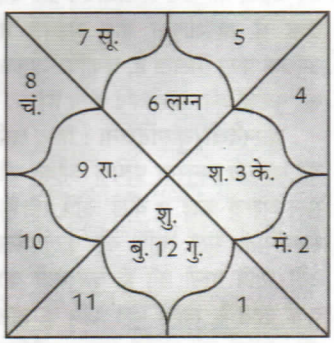

इष्टदेव जानने हेतु आई निम्नलिखित जन्मपत्रिका में गुरु 28 डिग्री के होकर आत्मकारक हैं और निम्न नवांश में मीन में स्थित हैं। कुंभ जीवनमुक्तांश राशि हुई, जिसमें कोई ग्रह स्थित नहीं है। इनको भी कूर्म देवता या विष्णु उपासना की ही सलाह दी गई।

2. **अन्य मत :** कुछ विद्वान नवम भाव और उस भाव से सम्बन्धित राशि तथा राशि के स्वामी के आधार पर और कुछ अन्य विद्वान पंचम भाव और उस भाव से सम्बन्धित राशि तथा राशि के स्वामी के आधार पर इष्टदेव का निर्धारण करते हैं, परन्तु पंचम को मंत्र साधन की सक्षमता और नवम को धार्मिकता के लिए अधिक सटीक माना गया है।

3. **निष्कर्ष :** उपर्युक्त नियमों के आधार पर इष्टदेव का निर्धारण कर जातक को मन को एकाग्र करना चाहिए। इसमें निपुणता के बाद परमात्मा रूपी परम तेज की कामना रहित भक्ति अपनानी चाहिए, क्योंकि सबका कारण और उद्देश्य एक ही है।

अहं सर्वस्य प्रभवो मत्तः सर्वं प्रवर्त्तते। इति मत्वा भजन्ते मां बुधा भावसमन्विताः।।

''मैं सबकी उत्पत्ति का कारण हूं। मुझसे ही सभी कार्यों में प्रवृत्त होते हैं। इस प्रकार समझकर ज्ञानी भावयुक्त होकर मुझे ही भजते हैं।''